श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्री गणेश वंदना,श्री गणेश चालीसा, चिन्तामणि षट्पदी

श्रीगणेशाष्टकम्

श्री गणेश वंदना

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो, विघ्ननाशो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि , यः(फ्) पठेच्छृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा।

संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते॥

1.सुमुख, 2.एकदन्त, 3.कपिल 4.गजकर्ण 5.लम्बोदर 6.विकट

7.विघ्ननाश 8.विनायक 9.धूम्रकेतु 10.गणाध्यक्ष 11.भालचन्द्र 12.गजानन;

इन बारह नामों के पाठ करने व सुनने से छः स्थानों जैसे विद्यारम्भ, विवाह, प्रवेश(प्रवेश करना), निर्गम(निकलना), संग्राम और संकट में सभी विघ्नों का नाश होता है

श्री गणेश चालीसा

जय गणपति सद्गुण सदन, करिवर बदन कृपाल।

विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल॥

ॐ गं गणपतये नमो नम:

श्री सिद्धिविनायक नमो नम:

अष्टविनायक नमो नम:

गणपति बप्पा मोरया

जय जय जय गणपति गणराजू।

मंगल भरण करण शुभ काजू॥

जय गजबदन सदन सुखदाता।

विश्व विनायक बुद्धि विधाता॥

वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन।

तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन॥

राजित मणि मुक्तन उर माला।

स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला॥

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं।

मोदक भोग सुगन्धित फूलं॥

सुन्दर पीताम्बर तन साजित।

चरण पादुका मुनि मन राजित॥

धनि शिवसुवन षडानन भ्राता।

गौरी ललन विश्व-विधाता॥

ऋद्धि सिद्धि तव चँवर डुलावे।

मूषक वाहन सोहत द्वारे॥

ॐ गं गणपतये नमो नम:

श्री सिद्धिविनायक नमो नम:

अष्टविनायक नमो नम:

गणपति बप्पा मोरया

कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी।

अति शुचि पावन मंगल कारी॥

एक समय गिरिराज कुमारी।

पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी॥

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा।

तब पहुंच्यो तुम धरि द्विज रूपा।

अतिथि जानि कै गौरी सुखारी।

बहु विधि सेवा करी तुम्हारी॥

अति प्रसन्न ह्वै तुम वर दीन्हा।

मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा॥

मिलहि पुत्र तुहि बुद्धि विशाला।

बिना गर्भ धारण यहि काला॥

गणनायक गुण ज्ञान निधाना।

पूजित प्रथम रूप भगवाना॥

अस कहि अन्तर्धान रूप ह्वै।

पलना पर बालक स्वरूप ह्वै॥

ॐ गं गणपतये नमो नम:

श्री सिद्धिविनायक नमो नम:

अष्टविनायक नमो नम:

गणपति बप्पा मोरया

बनि शिशु रुदन जबहि तुम ठाना।

लखि मुख सुख नहिं गौरि समाना॥

सकल मगन सुख मंगल गावहिं।

नभ ते सुरन सुमन वर्षावहिं॥

शम्भु उमा बहुदान लुटावहिं।

सुर मुनि जन सुत देखन आवहिं॥

लखि अति आनन्द मंगल साजा।

देखन भी आए शनि राजा॥

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं।

बालक देखन चाहत नाहीं॥

गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो।

उत्सव मोर न शनि तुहि भायो॥

कहन लगे शनि मन सकुचाई।

का करिहौ शिशु मोहि दिखाई॥

नहिं विश्वास उमा कर भयऊ।

शनि सों बालक देखन कह्यऊ॥

ॐ गं गणपतये नमो नम:

श्री सिद्धिविनायक नमो नम:

अष्टविनायक नमो नम:

गणपति बप्पा मोरया

पड़तहिं शनि दृग कोण प्रकाशा।

बालक शिर उड़ि गयो आकाशा॥

गिरजा गिरीं विकल ह्वै धरणी।

सो दुख दशा गयो नहिं वरणी॥

हाहाकार मच्यो कैलाशा।

शनि कीन्ह्यों लखि सुत को नाशा॥

तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाए।

काटि चक्र सो गज शिर लाए॥

बालक के धड़ ऊपर धारयो।

प्राण मन्त्र पढ़ शंकर डारयो॥

नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे।

प्रथम पूज्य बुद्धि निधि वर दीन्हे॥

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा।

पृथ्वी की प्रदक्षिणा लीन्हा॥

चले षडानन मरमि भुलाई।

रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई॥

ॐ गं गणपतये नमो नम:

श्री सिद्धिविनायक नमो नम:

अष्टविनायक नमो नम:

गणपति बप्पा मोरया

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें।

तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें॥

धनि गणेश कहि शिव हिय हरषे।

नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे॥

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई।

शेष सहस मुख सकै न गाई॥

मैं मति हीन मलीन दुखारी।

करहुँ कौन बिधि विनय तुम्हारी॥

भजत रामसुन्दर प्रभुदासा।

लख प्रयाग ककरा दुर्वासा॥

अब प्रभु दया दीन पर कीजै।

अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै॥

ॐ गं गणपतये नमो नम:

श्री सिद्धिविनायक नमो नम:

अष्टविनायक नमो नम:

गणपति बप्पा मोरया

दोहा

श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करें धर ध्यान।

नित नव मंगल गृह बसै, लहे जगत सनमान॥

सम्बन्ध अपने सहस्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।

पूरण चालीसा भयो , मंगल मूर्ति गणेश॥

चिन्तामणि षट्पदी

द्विरदवदन विषमरद वरद जयेशान , शान्तवरसदन ।

सदनवसादन सादनमन्तरा- यस्य रायस्य॥ 1॥

हाथी के मुख वाले, एकदंत , वरदायी, ईशान, परम शांति और समृद्धि के आश्रय , सज्जनों के क्लेश हर्ता , विघ्न विनाशक गणपति! आपकी जय हो।।1।।

इन्दुकलकलितालिक सालिकशुम्भत्- कपोलपालियुग ।

विकटस्फुटकटधाराधारोऽ- स्य प्रपञ्चस्य ॥ 2॥

चंद्रकला से सुशोभित भालवाले एवं दोनों गण्डस्थल से देदीप्यमान आप इस विकट उलझन से भरे संसार -प्रपंच के आधार हैं।।2।।

परपरशुपाणिपाणे पणितपणायेः(फ्), पणायितोऽसि यतः ।

आरुह्य वज्रदन्तं(वँ्), विदधासि विपदन्तम् ॥ 3 ॥

हे अंकुश और परशु को हाथ में धारण करने वाले! संपत्ति प्रदाता और सर्ववंद्य, आप मूषक पर आरूढ़ होकर भक्तों की विपत्तियों का नाश करते हैं।।3।।

लम्बोदर दूर्वासन शयधृतसामोद- मोदकाशनक ।

शनकैरवलोकय मां(यँ्) यमान्तराया- पहारिदृशा ॥ 4॥

हे लंबोदर! हे दूर्वा के आसन पर विराजमान! हे प्रसन्नतापूर्वक लड्डुओं का भोग लगाने वाले ! आप कृपा पूर्वक अपनी संकटनाशिनी दृष्टि मुझ पर डालिए।।4।।

आनन्दतुन्दिलाखिलवृन्दारकवृन्द- वन्दिताङ्घ्रियुग ।

सुराप्रदण्डरसालो नागजभालोऽ- तिभासि विभो ॥ 5॥

आनंद से भरे हुए देवगणों से पूजित चरण युगल वाले हे विभो! जल क्रीड़ा से स्निग्ध शुण्ड और गज मस्तक से आप सुशोभित हैं।।5।।

अगणेयगुणेशात्मज चिन्तकचिन्ता- मणे गणेशान ।

स्वचरणशरणं(ङ्) करुणावरुणालय, पाहि मां(न्) दीनम् ॥ 6 ॥

हे गणेश! हे अगणित गुणों के भंडार ! हे शिवपुत्र ! हे भक्तों के चिंतामणि ! हे करुणासागर! अपने चरणों की शरण में आए मुझ दीन की आप रक्षा करें।।6।।

रुचिरवचोऽमृतरावोन्नीता नीता , दिवस्तुतिः(स्) स्फीता ।

इति षट्पदी मदीया गणपति- पादाम्बुजे विशतु ॥ 7 ॥

सुंदर पदों से निर्मित , मधुर ध्वनि से संपन्न तथा आपके गुणगान से पवित्र मेरी यह षट्पदी गणपति के चरणारविंद में सुशोभित हो।।7।।

इति चिन्तामणिषट्पदी ॥

इस प्रकार चिंतामणि षट्पदी संपूर्ण हुई।।

श्रीगणेशाष्टकम्

सर्वे ऊचुः

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा, यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते।

यतो भाति सर्वं(न्) त्रिधा भेदभिन्नं, सदा तं(ङ्) गणेशं(न्) नमामो भजामः॥1॥

सब भक्तों ने कहा – जिन अनन्त शक्ति वाले परमेश्वर से अनन्त जीव प्रकट हुए हैं, जिन निर्गुण परमात्मा से अप्रमेय (असंख्य) गुणों की उत्पत्ति हुई है, सात्विक, राजस और तामस – इन तीनों भेदों वाला यह सम्पूर्ण जगत् जिनसे प्रकट एवं भासित हो रहा है, उन गणेश को हम नमन एवं उनका भजन करते हैं।।1।।

यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत्- तथाऽब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता।

तथेन्द्रादयो देवसङ्घा मनुष्याः(स्), सदा तं(ङ्) गणेशं(न्) नमामो भजामः॥2॥

जिनसे इस समस्त जगत् का प्रादुर्भाव हुआ है, जिनसे कमलासन ब्रह्मा, विश्वव्यापी विश्व रक्षक विष्णु, इन्द्र आदि देव-समुदाय और मनुष्य प्रकट हुए हैं,उन गणेश का हम सदा ही नमन एवं उनका भजन करते हैं।।2।।

यतो वह्निभानूद्भवो भूर्जलं(ञ्) च, यतः(स्) सागराश्चन्द्रमा व्योम वायुः।

यतः(स्) स्थावरा जङ्गमा वृक्षसङ्घाः(स्), सदा तं(ङ्) गणेशं(न्) नमामो भजामः॥3॥

जिनसे अग्नि और सूर्य का प्राकट्य हुआ, पृथ्वी, जल, समुद्र, चन्द्रमा, आकाश और वायु का प्रादुर्भाव हुआ तथा जिन से स्थावर-जंगम और वृक्ष समूह उत्पन्न हुए हैं, उन गणेश का हम नमन एवं भजन करते हैं।।3।।

यतो दानवाः(ख्) किन्नरा यक्षसङ्घा, यतश्चारणा वारणाः(श्) श्वापदाश्च।

यतः(फ्) पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च, सदा तं(ङ्) गणेशं(न्) नमामो भजामः॥4॥

जिनसे दानव, किन्नर और यक्ष समूह प्रकट हुए, जिनसे हाथी और हिंसक जीव उत्पन्न हुए तथा जिनसे पक्षियों, कीटों और लता-बेलों का प्रादुर्भाव हुआ, उन गणेश का हम सदा ही नमन और भजन करते हैं।।4।।

यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोर्- यतः(स्) सम्पदो भक्तसन्तोषिकाः(स्) स्युः।

यतो विघ्ननाशो यतः(ख्) कार्यसिद्धिः(स्), सदा तं(ङ्) गणेशं(न्) नमामो भजामः॥5॥

जिनसे मुमुक्षु को बुद्धि प्राप्त होती है और अज्ञान का नाश होता है, जिनसे भक्तों को संतोष देने वाली सम्पदाएँ प्राप्त होती हैं तथा जिनसे विघ्नों का नाश और समस्त कार्यों की सिद्धि होती है, उन गणेश का हम सदा नमन एवं भजन करते हैं।।5।।

यतः(फ्) पुत्रसम्पद्यतो वाञ्छितार्थो, यतोऽभक्तविघ्नास्तथाऽनेकरूपाः।

यतः(श्) शोकमोहौ यतः(ख्) काम एव, सदा तं(ङ्) गणेशं(न्) नमामो भजामः॥6॥

जिन से पुत्र-सम्पत्ति सुलभ होती है, जिनसे मनोवांछित अर्थ सिद्ध होता है, जिनसे अभक्तों को अनेक प्रकार के विघ्न प्राप्त होते हैं तथा जिनसे शोक, मोह और काम प्राप्त होते हैं, उन गणेश का हम सदा नमन एवं भजन करते हैं।।6।।

यतोऽनन्तशक्तिः(स्) स शेषो बभूव, धराधारणेऽनेकरूपे च शक्तः।

यतोऽनेकधा स्वर्गलोका हि नाना, सदा तं(ङ्) गणेशं(न्) नमामो भजामः॥7॥

जिनसे अनन्त शक्ति सम्पन्न सुप्रसिद्ध शेषनाग प्रकट हुए, जो इस पृथ्वी को धारण करने एवं अनेक रूप ग्रहण करने में समर्थ हैं, जिनसे अनेक प्रकार के अनेक स्वर्गलोक प्रकट हुए हैं, उन गणेश का हम सदा ही नमन एवं भजन करते हैं।।7।।

यतो वेदवाचो विकुण्ठा मनोभिः(स्) , सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति।

परब्रह्मरूपं(ञ्) चिदानन्दभूतं , सदा तं(ङ्) गणेशं(न्) नमामो भजामः॥8॥

जिनके विषय में वेद वाणी कुंठित है, जहाँ मन की भी पहुंच नहीं है तथा श्रुति सदा सावधान रहकर नेति-नेति' – इन शब्दों द्वारा जिनका वर्णन करती है, जो सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म है, उन गणेश का हम सदा ही नमन एवं भजन करते हैं।।8।।

श्रीगणेश उवाच

पुनरूचे गणाधीशः(स्) स्तोत्रमेतत्पठेन्नरः ।

त्रिसंध्यं(न्) त्रिदिनं(न्) तस्य, सर्वं(ङ्) कार्यं भविष्यति ॥9॥

श्री गणेश कहते हैं कि जो मनुष्य तीन दिनों तक तीनों संध्याओं के समय इस गणाधीश स्तोत्र का पाठ करेगा, उसके सारे कार्य सिद्ध हो जायेंगे।।9।।

यो जपेदष्टदिवसं, श्लोकाष्टकमिदं शुभम् ।

अष्टवारं(ञ्) चतुर्थ्यां(न्) तु, सोऽष्टसिद्धीरवानप्नुयात् ॥10॥

जो आठ दिनों तक इन आठ श्लोकों का एक बार पाठ करेगा और चतुर्थी तिथि को आठ बार इस स्तोत्र को पढ़ेगा, वह आठों सिद्धियों को प्राप्त कर लेगा।।10।।

य:(फ्) पठेन्मासमात्रं(न्) तु , दशवारं(न्) दिने दिने ।

स मोचयेद् बन्धगतं, राजवध्यं(न्) न संशय: ॥11॥

जो एक माह तक प्रतिदिन दस-दस बार इस स्तोत्र का पाठ करेगा, वह कारागार में बंधे हुए तथा राजा के द्वारा वध-दण्ड पाने वाले कैदी को भी छुड़ा लेगा, इसमें संशय नहीं है।।11।।

विद्याकामो लभेद्विद्यां, पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ।

वाञ्छिताँल्लभते सर्वा- नेकविंशतिवारत: ॥12॥

इस स्तोत्र का इक्कीस बार पाठ करने से विद्यार्थी विद्या को, पुत्रार्थी पुत्र को तथा कामार्थी समस्त मनोवांच्छित कामनाओं को प्राप्त कर लेता है।।12।।

यो जपेत्परया भक्त्या, गजाननपरो नर: ।

एवमुक्त्वा ततो देवश्- चान्तर्धानं(ङ्) गत:(फ्) प्रभु: ॥13॥

जो मनुष्य पराभक्ति से इस स्तोत्र का जप करता है, वह गजानन का परम भक्त हो जाता है-ऐसा कहकर भगवान गणेश वहीं अंतर्धान हो गए।।13।।

इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्रीगणेशाष्टकं संपूर्णम् ॥